



मेव महिलाओं में सामाजिक-राजनीतिक चेतना एक अध्ययन

डा. रूचि आहुजा

सारांश- यह शोध पत्र मेव समुदाय की महिलाओं में सामाजिक- राजनीतिक चेतना का विश्लेषण करने का प्रयास करता है और मेव महिलाओं के विकास में अवरोधक तत्वों के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व को उभारने की योजनाओं पर प्रकाश डालता है। सामाजिक - राजनीतिक चेतना विकास की एक मुख्य प्रक्रिया है जो महिलाओं को ग्रामीण समुदाय के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सतत विकास में भाग लेने में सक्षम बनाती है। मेव पुरुष प्रधान समाज में आज भी महिलाओं की स्थिति सामाजिक व राजनीतिक चेतना की दृष्टि से न्यूनतम स्तर पर है। देश को आजाद हुए सतर वर्ष हो गए परन्तु मेव महिलाएं अभी भी सामाजिक रुद्धिवादिताओं से मुक्त नहीं हो पायी हैं। पुरुष निर्भरता ही उनकी जीवन शैली है। यह अध्ययन विशुद्ध रूप से प्राथमिक स्रोतों पर आधारित है। भारत की मेव महिलाएं विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं अपेक्षाकृत अशक्त हैं और सरकार द्वारा किए गए कई प्रयासों के बावजूद वे पुरुषों की तुलना में कुछ कम स्थिति का लाभ लेती हैं। अलवर जिले की दो पंचायत समितियों (किशनगढ़ व तिजारा) के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकला है कि सामाजिक सोच में परिवर्तन लाना सामाजिक-राजनीतिक चेतना के लिए सक्षम कारक है।

मुख्य शब्द - महिला अधिकारिता, बुनियादी अधिकार, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य

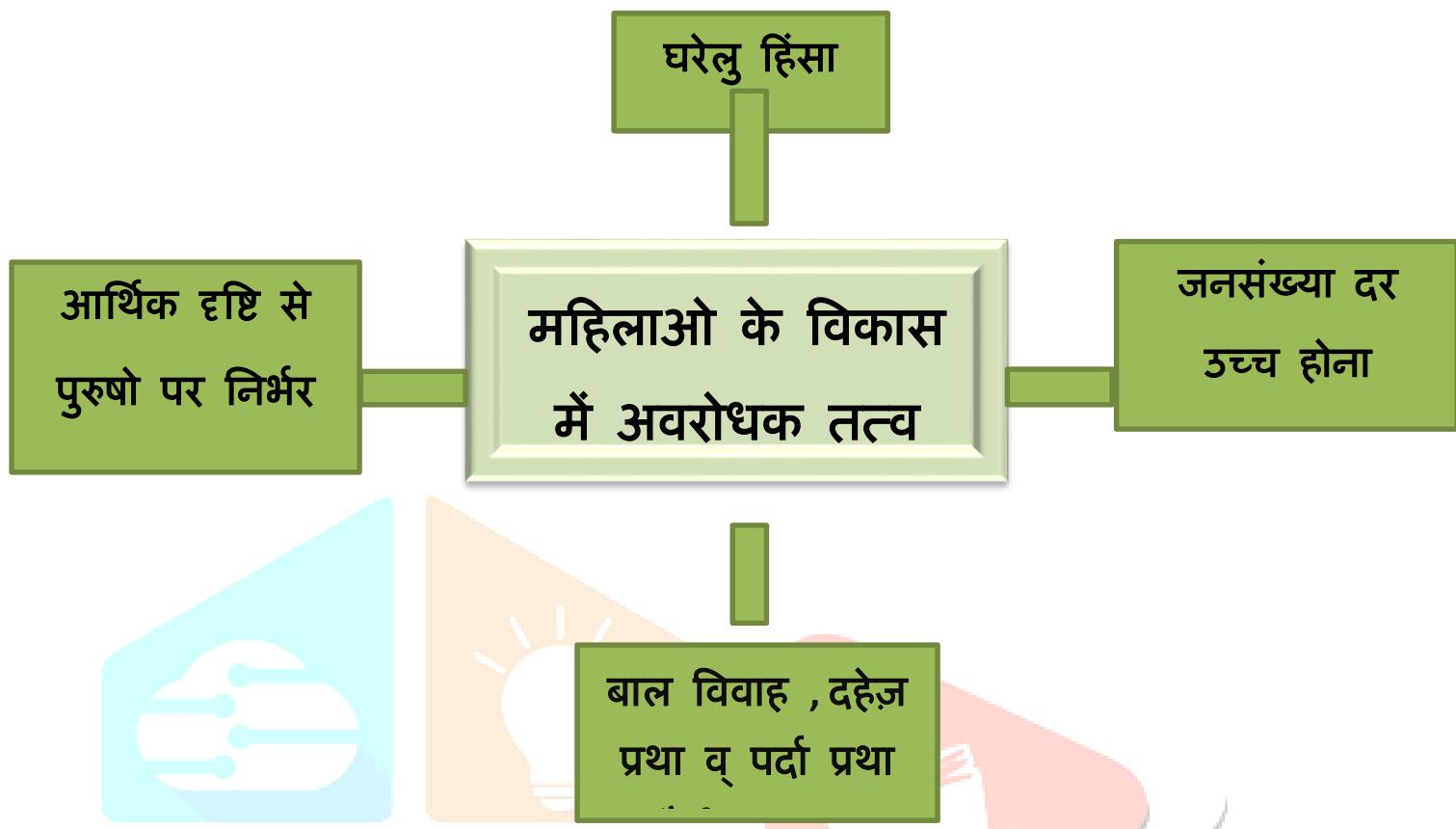
प्रस्तावना - मेवात एक प्राचीन गौरवशाली, शौयपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ की प्रमुख जन-जाति “मेव” है, इसे मेवात क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किया गया है। मेवात न तो कोई प्रशासनिक इकाई है और न ही किन्हीं भौगोलिक या प्राकृतिक सीमाओं से गठित किसी एक भू भाग का नाम है। इसलिए इस क्षेत्र को विशेष रूप से किसी भी मानचित्र पर अंकित नहीं किया जा सकता है। अतः मेव बस्तियों को एकमात्र आधार मानकर ही अध्ययन का आरम्भ संभव है। मेव बस्तियों का फैलाव और निरन्तरता तथा उससे उत्पन्न सामाजिक और आर्थिक प्रभाव इस क्षेत्र के विशिष्ट चरित्र का निर्धारण करते हैं, जिसकी अभिव्यक्ति ‘मेवात’ शब्द में होती है।

मेवात एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी सीमाएं सही तौर पर व्यक्त नहीं की जा सकती। यह मुख्यतः दिल्ली के दक्षिण में स्थित है, इसमें जिला मथुरा, फरीदाबाद, गुरुग्राम व् पूर्व रियासत अलवर व् भरतपुर के कुछ हिस्से भी शामिल हैं। मेवात क्षेत्र की सीमाएं समय के अनुसार परिवर्तित होती रही हैं। आमेर से चालीस कोस उत्तर दिशा की ओर थोड़ा सा हटकर मेवात क्षेत्र प्रारम्भ होता है। इसका प्रारंभिक स्थल अलवर और यमुना नदी पर यह समाप्त होता है। राजस्थान के जिला अलवर की रामगढ़, तिजारा, किशनगढ़ बास, लक्ष्मणगढ़, गोविंदगढ़ तहसीलों तथा जिला भरतपुर की कामा, डीग, नगर तथा पहाड़ी तहसीलों आती हैं। यह सारा क्षेत्र अरावली पहाड़ की श्रंखलाओं के बीच फैला हुआ है। इस तरह अरावली पर्वत को मेवात का गौरव माना जाता है। अरावली पर्वत मेवात को सम्पूर्ण इतिहास को अभिव्यक्त करता है। मेव सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी दृष्टियों से विशिष्ट लक्षणों से युक्त समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस समुदाय की पहचान अनायास ही निर्मित नहीं हुई है बल्कि इसके निर्धारण में अनेक भौगोलिक, सामाजिक, व राजनीतिक कारण उत्तरदायी रहे हैं। विशिष्ट लक्षणों से युक्त होते हुए भी मेव समुदायमें आधुनिक प्रवृत्तियों को अपनाने के प्रति आग्रहशील दृष्टिकोण का अभाव है मुख्यरूप से महिलाओं के विकास के संदर्भ में।

महिलाओं को सहिष्णुता, सहयोग और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। सदियों से विश्व की सभी संस्कृतियों में स्त्री को “देवी” के समान मानने के बावजूद भी उनकी सार्वजनिक भूमिका को नजरअंदाज किया जाता रहा है। समय परिवर्तन के साथ पुरुष वर्गों की सोच में भी परिवर्तन आने लगा जिससे सामान्यतः महिलाओं की स्थिति पहले की अपेक्षा सुदृढ़ हो सकी। परिवर्तित समय के बावजूद मेव समुदाय भी अब रुदिवादी मानसिकताओं से ग्रस्त है। यही कारण है कि मेव महिलाओं में अशिक्षा व जागरूकता का अभाव पाया जाता है।



मेव समुदाय की महिलाओं को विकास में अनेक अवरोधक तत्व हैं जिन्हे निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है :-



उपरोक्त विषय के आधार पर मेव महिलाओं की वास्तविक स्थिति को निर्धारित किया जा सकता है।

मेव महिलाओं की भूमिका राजनितिक चेतना के सन्दर्भ में - स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं की स्थिति में पहले की अपेक्षा अत्यधिक सुधार हुआ है। किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने लम्बे समय के पश्चात् भी ग्रामीण मेव महिलाओं की स्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई नहीं देता है। उनका आज भी अनेकों प्रकार से शोषण किया जाता है और अभी भी सामाजिक कुरीतियों की बंधन से ये महिलायें ग्रसित हैं। समस्त समुदायों के समान मेव समुदाय में भी महिलाएं आधे हिस्से का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसलिए आधे समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाली महिला वर्ग की, अन्य क्षेत्रों के समान राजनीति में भी भागीदारी आवश्यक है।

महिलाओं की राजनिति में भूमिका के महत्व को स्वीकार करते हुए पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिये एक तिहाई स्थान 73वें संविधान संशोधन के अन्तर्गत निर्धारित किये गये। वर्तमान में महिलायों को पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। जिसके कारण अधिक से अधिक मेव महिलाओं ने राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। किन्तु केवल प्रवेश के आधार पर ही मेव महिलाओं की पूर्ण सहभागिता का निर्धारण नहीं किया जा सकता, बल्कि यह तो राजनीतिक चेतना के स्तर के आधार पर ही निर्धारित किया जा सकता है। अतः मेव महिलाओं की सामाजिक व राजनीतिक संस्थाओं के प्रति जागरूकता व् शासन सचांलन की क्षमता का पता लगाने का प्रयत्न प्रस्तुत अध्याय में किया गया है। मेव महिलाओं की राजनितिक चेतना के निर्धारण के कुछ मुख्य क्षेत्र हैं -

- शिक्षा
- मतदान
- संचार के साधन
- आयु , जाति , व्यवसाय
- लड़के व लड़कियों के बीच असमानता
- आरक्षण
- उच्च जन्म दर
- मेव महिलाओं से लिए गये आकड़ों के अनुसार राजनीति में कार्यरत एवं सामान्य महिलाओं का सबसे अधिक प्रतिशत 18 से 28 वर्ष की आयु वाली महिलाओं का है। किन्तु ये महिलाएं विचारों की दृष्टि से स्वतंत्र न होकर पारिवारिक व् सामाजिक बन्धनों से जकड़ी हुई हैं निर्णय लेने की स्वतंत्रता ही उनकी सामाजिक - राजनीतिक चेतना को प्रदर्शित करती है।
- अशिक्षित होने के कारण मेव महिलाएं अपने को असहाय महसूस करती हैं और राजनीतिक कार्यों से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ रहती हैं।
- संचार के साधनों के प्रति पूर्ण रूप अनभिज्ञ रहने के कारण भी इन महिलाओं में राजनीतिक चेतना की पूर्ण रूप से अभाव पाया जाता है।
- मतदान प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत अधिकार है। मेव महिलाएं मत देने के अधिकार का तो पूर्ण रूप से उपयोग करती हैं किन्तु मत देने की स्वतंत्रता उन्हें नहीं होती।
- मत देने के साथ – साथ मतदान के प्रचार कार्यों में सम्मिलित होना भी उनकी राजनीतिक चेतना की भावना को प्रदर्शित करता है। किन्तु जब मेव महिलाओं को मत देने की ही स्वतंत्रता नहीं है तो मतदान के प्रचार कार्यों में सम्मिलित कैसे हो पायेंगी।
- बच्चों की संख्या अधिक होना भी महिलाओं की राजनीतिक चेतना के निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। बच्चों की संख्या अधिक होने के कारण (5 से 10 के बीच) उनका अधिकांश समय उनकी देखभाल करने में व्यतीत हो जाता है जिससे स्वयं के बारे में सोचने का उन्हें अवसर ही प्राप्त नहीं होता।
- मेव समाज पुरुष प्रधान समाज है इसलिए मेव महिलाओं को केवल पुरुषों द्वारा लिये गये निर्णयों की पालना करने को बाध्य किया जाता है उनकी इच्छा को कोई महत्व नहीं दिया जाता।
- महिलाओं की स्थिति को ऊँचा उठाने के लिए वर्तमान में अनेक कानूनों के साथ- 2 गैर सरकारी संस्थाएँ भी प्रत्येक ग्राम में कार्यरत हैं। किन्तु ये महिलाएं नियम, कानूनों व अपने गांव में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थायों के विषय में कोई जानकारी नहीं रखती है। जानकारी के अभाव में इन महिलाओं में राजनीतिक चेतना का पूर्ण रूप से अभाव पाया जाता है।

साहित्यिक पुनरावलोकन- प्रस्तुत विषय में ऐतिहासिक एवं व्यवहारगत दोनों पक्ष सम्मिलित हैं। मेव महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान में राजनीतिक चेतना के स्तर व प्रवृत्तियों को जानने के लिए ऐतिहासिक व व्यवहार मूलक अध्ययन का सहारा लिया गया है। अली, अमीर हासिम ने अपनी पुस्तक "दि मेवज ऑफ मेवात" में मेव महिलाओं की वास्तविक स्थिति का स्पष्ट रूप से विवेचन किया गया है। मेव सिद्दीक अहमद ने "मेवाती

"संस्कृति" में मेवात क्षेत्र की संस्कृति का विश्लेषात्मक अध्ययन किया है। मेवाती श्रीमती मुमताज खाँ ने "मेव कौम का संक्षिप्त परिचय में" मेव समुदाय की सामाजिक, भौगोलिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक स्थिति को स्पष्ट रूप से विवेचित किया है।

भोरवाल, भगवानदास ने "बाबल तेरा देश में काला पहाड़" में मेव महिलाओं की व्यावहारिक स्थिति को विवेचित किया है।

शम्स , शम्सुद्दीन ने "मेवज ऑफ इंडिया देयर कस्टम्स एंड लॉज " में मेव समुदाय की संस्कृति का विवेचन किया है।

सारिया पी. डी. ने " इंडियन रूरल वुमेन " के अंतर्गत भारतीय ग्रामीण महिलाओं की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य – किसी भी शोध का एक निश्चित उद्देश्य अवश्य होता है। मूल रूप से शोध ज्ञान की वृद्धि के साधन होते हैं। ज्ञान मोटे तौर पर हो रूपों में होता है प्रथम सैद्धांतिक या ज्ञान सम्बन्धी उद्देश्य और द्वितीय व्यावहारिक या प्रयोगवादी उद्देश्य। प्रस्तुत शोध मेव महिलाओं की सामाजिक - राजनीतिक चेतना " का उद्देश्य भी सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार का है। महिलाओं की स्थिति के संबंध में ज्ञान की अभिवृद्धि हमारा सैद्धांतिक पक्ष है और उनकी स्थिति में परिवर्तन तथा विकास में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करके सुधारात्मक उपाय बताना अध्ययन का व्यावहारिक पक्ष है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

- मेव महिलाओं की सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करना।
- मेव महिलाओं की सामाजिक – राजनीतिक जागरूकता का आकंलन करना।
- मेव महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का अवलोकन करते हुए उसे उच्च करने के उपाय बताना।
- चयनित पंचायत में निर्वाचित महिलाओं की भागीदारी को प्रमाणित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना।
- राजनीति में भागीदार महिलाओं की वास्तविक भागीदारी का अवलोकन करना।
- सामाजिक संतुलन के विकास के लिए उपयोगी सुझाव देना।
- मेव समुदाय में लैंगिक भेदभाव को समझना।

अध्ययन का औचित्य-प्रस्तुत शोध मेव महिलाओंके राजनीतिक,सामाजिक व आर्थिक पक्ष के व्यापक आयामों के अध्ययन,अनुसंधान व विश्लेषण कीप्रक्रिया को प्रारम्भ करेगा तथा इस क्षेत्र में अनुसंधान की संभावनाओं को प्रशस्त करेगा।

शोध प्रविधियाँ - प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक व द्वितीय दोनों प्रकार के स्नोतों से सहायता ली जायेगी। प्राथमिक स्नोत के रूप में तथ्य संकलन, साक्षात्कार एवं शोध प्रश्नावली के माध्यम से किया जायेगा अर्थात् मेव महिलाओं में से जो राजनीति में कार्यरत हैं और जो कार्यरत नहीं उनकी वास्तविक स्थिति साक्षात्कार द्वारा जानी जायेगी।

तथ्य संकलन के द्वितीयक स्नोत के रूप में विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षणों, पुर्वान भवश्रितो, शोधआलेख, समाचार पत्र, शोध पत्रिकायों, पंचायतों व पंचायत समितियों में महिलाओं से सम्बन्धित प्रतिवेदनों का सहारा लिया जायेगा, ताकि शोध को बल मिल सकें।

आकड़ो के संकलन का स्रोत – शोधार्थी द्वारा प्राथमिक स्तर के आकड़े प्राप्त करने के लिये अलवर जिले की ही पंचायत समितियों (किशनगढ़बास व तिजारा) की 150 सामान्य मेव महिला एंव 50 महिलाएं जो राजनीति संस्था (पंचायत समिति) में कार्यरत हैं, से निर्देशन विधि के अन्तर्गत साक्षात्कार एवं प्रश्नावली का प्रयोग कर व्यक्तिगत प्रेक्षण विधि व अनुसूची विधि को उपयोग में लेकर आँकड़ों का अध्ययन किया जायेगा।

निष्कर्ष- भारत के संविधान द्वारा लिंग भेद की समस्त परम्पराओं को दरकिनार करते हुए महिलाओं को समान अधिकार और समान सहभागिता के अवसर दिए गए हैं। कालातंर में व्यवस्थापिका निर्मित कानूनों, न्यायालयों के निर्णयों ने महिलाओं की स्थिति को और मजबूत किया। लेकिन इतने समय के पश्चात् भी मेव समुदाय अभी तक विकास की प्रथम सीढ़ी पर भी सही ढंग से नहीं चढ़ पाया है विशेष रूप से ग्रामीण समुदाय। संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद भी इस समुदाय में महिलाओं के साथ दोयम दर्ज की नागरिक के सामान व्यवहार होता है। उन्हें सामाजिक व राजनीतिक दृष्टि से जागृत होने का अवसर ही नहीं दिया जाता अर्थात् महिलाओं को अपने अधिकारी को प्रति जागृत होने के सभी साधनों से बंचित रखा जाता है जिसके लिए मुख्य रूप से पुरुष वर्ग की रुद्धिवादी मानसिकता उत्तरदायी है।

वर्तमान में 50 प्रतिशत आरक्षण देने का मुख्य उद्देश्य ही इनको ग्राम विकास की मुख्य धारा में जोड़ने का रहा है। लेकिन महिलाओं को इतने व्यापक अधिकार प्राप्त होने पर भी मेव महिलाएं अपने अधिकारों का पूर्ण रूपसे प्रयोग करने में सक्षम नहीं हैं। जिसके कारण पुरुषों द्वारा महिलाओं को माध्यम बनाकर इन व्यवस्थाओं का दुरुपयोग किया जा रहा है। जैसे अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में मेवों की जनसंख्या अधिक होने के कारण प्रत्येक तीसरे पद पर मेव महिला निर्वाचित हैं किन्तु इन महिलाओं पर पुरुषों का पूर्ण वर्चस्व व इनमें शिक्षा का अभाव होने के कारण महिलाएं राजनीतिक से सम्बन्धित कार्यों में सहभागी नहीं हो पाती हैं। उन्हें चुनाव लड़ाकर उनके नाम पर घर के पुरुष राजनीति करते हैं। प्रस्तावित शोध के अध्ययन के आधार मेव महिलाओं की सामाजिक – राजनीतिक चेतना के समग्र विक्षेपण से निम्न निष्कर्ष सामने आए –

- दृष्टिकोण में परिवर्तन का नितांत अभाव है
- सत्ता शक्ति के विकेन्द्रीकरण का अभाव
- राजनीतिक चेतना का अभाव
- सकारात्मक सामाजिक वातावरण का अभाव

अतः मेव महिलाओं को सामाजिक व् राजनीतिक चेतना की दृष्टि से सशक्त बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मेव महिलाओं की राजनीतिक चेतना का स्तर अन्य महिलाओं की अपेक्षा न्युन है इसके मुख्य कारण हैं मेव समाज में विधमान सामाजिक स्थितियों एवं महिला शिक्षा का अभाव इसलिए मेव महिलाओं की सामाजिक - राजनीतिक चेतना के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं।

- सामाजिक सोच में परिवर्तन हेतु प्रयास किये जाने चाहिए
- आर्थिक संसाधनों के आधार पर उनमें आत्मनिर्भरता की भावना का विकास
- सामाजिक कुरीतिया के विरुद्ध जनजागरण हेतु प्रयास किये जाने चाहिए
- मेव महिला शिक्षा के लिए अधिक प्रयत्न किये जाये। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में प्रौढ़ शिक्षा के लिए अधिक प्रयत्न किये जाये प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का जागरूकता मंच के रूप में प्रयोग किया जाए।
- राजनीतिक समाजीकरण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- महिलाओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों व शक्तियों के सन्दर्भ में परिचित करने के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाने चाहिए।
- महिलाओं को आरक्षण व्यवस्था द्वारा प्राप्त अधिकारों से परिचित कराया जाना चाहिए।
- मेव समुदाय की रुद्धिवादी विचारधारा में परिवर्तन के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

- अब्दुरशाकूर, हकीम : तारीख - ए - मेव क्षत्रिय, मौलाना आजाद मेवाती अकादमी, गुडगांव, 1974
- अली, हाशिम अमीर : दी मेवज ऑफ मेवात, ओल्ड नेबर्स ॲफ न्यू देहली, पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली 1967
- अंसारी, एम -ए. : महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन जयपुर 2000
- आर्य, दिवान चंद : आईना-ए-मेवात, कन्हैयालाल मेमोरियल अस्पताल, गुडगांव, 1999
- गोयल, सुनील : भारतीय समाज में नारी, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स जयपुर 2003
- जोशी, अनिल : मेव लोक संस्कृति, कुसुम प्रकाशन, अलवर, 1984
- किशोर, राज : स्त्री के लिए जगह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1994
- मेवाती, लॉर्ड सशु : मेवाती की पहेलियां, बडोदा मेव, अलवर 1992
- मितल, मुक्ता : यूमेन इन इंडिया फ्राम पर्दा टू मॉडनिटी, विकास पब्लिशर्स हाउस, नई दिल्ली 1976
- रमा, पाण्डे : पंचायती राज, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 1989
- शर्मा, रोमी : भारतीय महिलाएँ, नई दिशाएँ, सुचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, 2002
- नंदा, वी.आर. : इंडियन वीमन फ्रॉम पर्दा टू मॉडनिटी विकास पब्लिशर्स हाउस, नई दिल्ली 1976